MA- Sem-III CC-12

अधिकतम सामाजिक कल्याण का सिद्धांत
The Principle of Maximum Social Advantage

यह सिद्धान्त समाज के आर्थिक कल्याण को सम्पूर्ण रूप में, अधिकतम करने की दृष्टि से लोक वित्त की कार्यवाहियों का निर्देशन करता है।

इस सिद्धांत का प्रतिपादन प्रो० डाल्टन ने किया था। इस सिद्धांत को पीगू ने अधिकतम सामूहिक कल्याण का सिद्धांत तथा मसग्रेव ने इसे बजट निर्धारण का अधिकतम कल्याण का सिद्धांत के नाम से प्रस्तावित किया है।

अधिकतम सामाजिक लाभ के सिद्धांत के अनुसार, राज्य की अपनी आय की प्राप्ति और धन का व्यय इस प्रकार करना चाहिए ताकि जनता के कल्याण में अधिकतम वृद्धि हो सके। जब सरकार कर लगाती है तो कुछ अनुपयोगिता या तुष्टिहीनता (Disutility) उत्पन्न होती है। दूसरी ओर, जब सरकार धन व्यय करती है लोगों की उपयोगिता या तुष्टिगुण (Utility) में वृद्धि होती है, अतः सरकार को अपने आय-व्यय को इस प्रकार समायोजित करना चाहिए की बड़ी संख्या में लोगों के कल्याण में वृद्धि होती है। जिससे माना जा सकता है कि सम्पूर्ण रूप में समाज का शुद्ध कल्याण अधिकतम हुआ है।

प्रो० डाल्टन के अनुसार - "सरकारी व्यय प्रत्येक दिशा में ठीक उस सीमा तक किये जाने चाहिए कि जिससे किसी भी क्षेत्र में इस व्यय की थोड़ी-सी भी और वृद्धि से समाज को प्राप्त होने वाले लाभ में, और इसके विपरीत कराधान अथवा

अन्य सरकारी आय के अन्य किसी साधन में की जाने वाली थोड़ी-सी भी वृद्धि से होने वाली हानि में, समान सन्तुलन स्थापित किया जा सके। यह नियम सरकारी व्यय तथा सरकारी आय दोनों की ही एक आदर्श सीमा प्रस्तुत करता है।

इसे निम्नांकित तालिका एवं रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं।

तालिका – 1

कराधान और सार्वजनिक व्यय की मुद्रा की इकाई	कर की प्रत्येक इकाई से त्याग	व्यय की प्रत्येक इकाई से सन्तुष्टि
1	10	90
2	20	75
3	30	65
4	40	55
5	50	50
6	60	35
7	70	25
8	80	75

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि समाज पर कर की प्रत्येक इकाई भार में वृद्धि से सीमान्त त्याग बढ़ता जाता है। इसके विपरीत सार्वजनिक व्यय की प्रति अतिरिक्त इकाई से समाज के लिए इसकी उपयोगिता पहले की अपेक्षा कम होती जाती है।

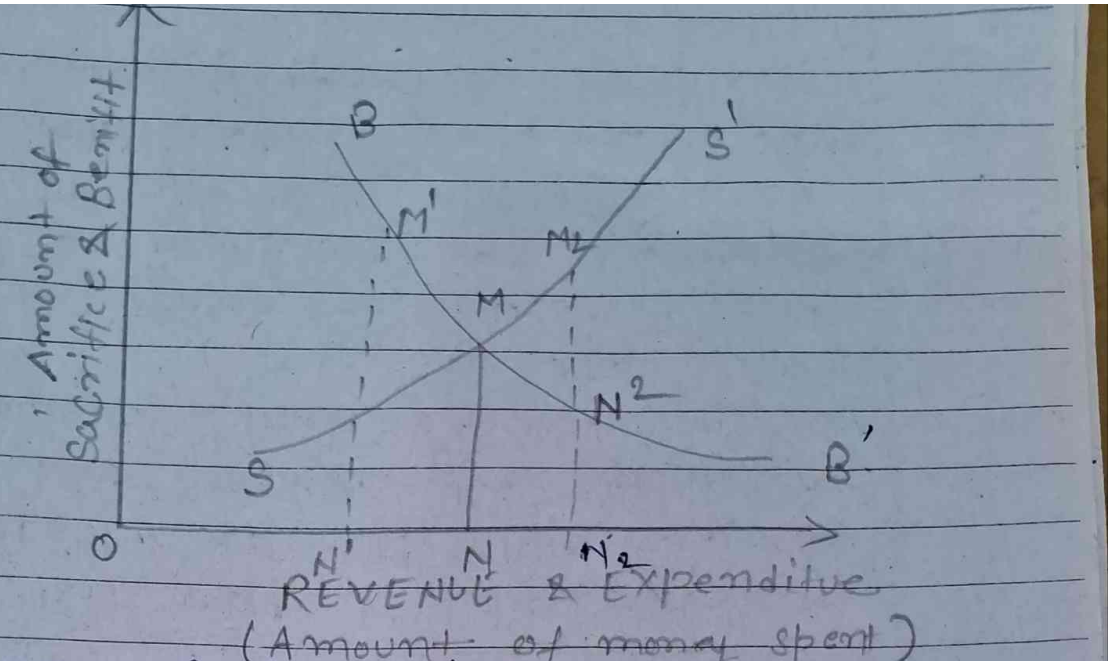

SS' → त्याग या तुष्टि हीनता की रेखा।
BB' → लाभ या तुष्टिगुण की रेखा।

उपरोक्त रेखा चित्र के द्वारा अधिकतम सीमा को बताया जा रहा है। इस रेखाचित्र में SS' तथा BB' वक्र M बिन्दु पर आकर मिल रहे है, तथा MN को अधिकतम स्तर के रूप में प्रदर्शित कर रहे है। इसलिए M बिन्दु पर लाभ के रूप में अधिकतम कल्याण होगा। इसके आगे यदि वित्तीय गतिविधियां N' बिन्दु पर समाप्त हो जाती है तो सीमान्त लाभ सीमान्त त्याग से अधिक है, इस बिन्दु पर सार्वजनिक व्यय के रूप में उपयोगिता समाज पर लगाए गए करो की अनुपयोगिता से अधिक है, यह प्रक्रिया तबतक चलती रहती है जबतक N स्तर तक व्यय बढ़ नही जाता। यदि M बिन्दु से आगे जाते है सीमान्त त्याग सीमान्त लाभ से सीमान्त लाभ से अधिक हो जाता है, जिसे M_2 बिन्दु के द्वारा बताया गया है, जहां M_2 से N_2 का अन्तर के द्वारा देख सकते है। कि सीमान्त त्याग सीमांत लाभ से बढ़ जाता है,

अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि अधिकतम सामाजिक लाभ प्राप्त करने के लिए वित्तीय गतिविधियां उस स्तर तक की जा सकती है, जहाँ सार्वजनिक व्यय की सीमान्त उपयोगिता सार्वजनिक राजस्व की सीमान्त अनुपयोगिता के बराबर है।

अधिकतम सामाजिक लाभ सिद्धांत की व्याख्या कुल सामाजिक त्याग तथा कुल सामाजिक लाभ वक्र द्वारा भी किया जाता है। अधिकतम सामाजिक लाभ उस बिन्दु पर प्राप्त होगा जहाँ कुल सामाजिक लाभ तथा कुल सामाजिक त्याग का अन्तर सबसे अधिक होता है। इसे निम्न रेखाचित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते है।

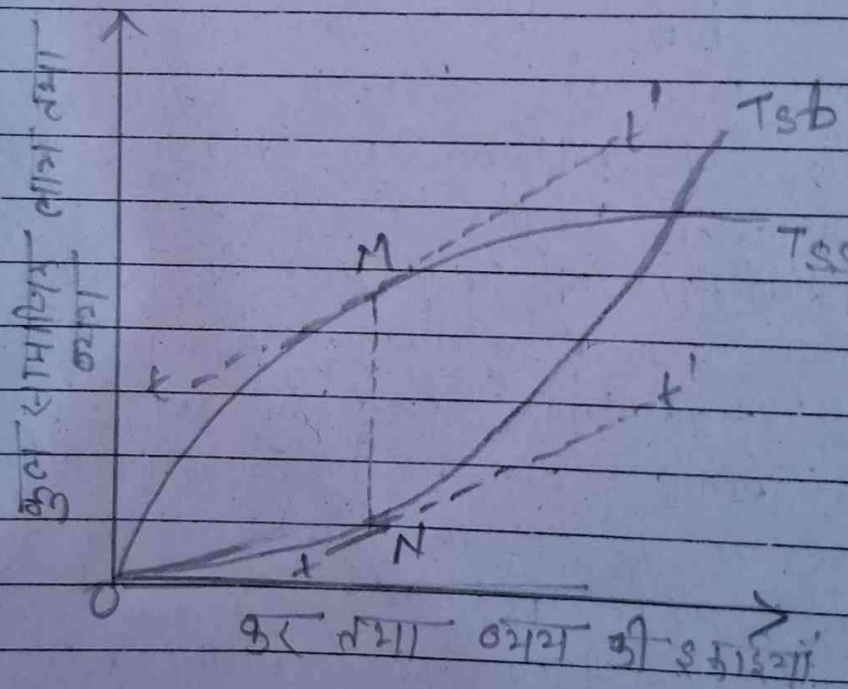

TSb → सार्वजनिक व्यय से प्राप्त कुल सामाजिक लाभ

TSS → कर से उत्पन्न कुल सामाजिक त्याग

TSb वक्र जिसका ढाल ऊपर की ओर उठता हुआ है, यह वक्र यह बताता है कि जैसे-जैसे सार्वजनिक व्यय में वृद्धि होती है कुल सामाजिक लाभ बढ़ता जाता है किन्तु एक बिन्दु के बाद घटने लगता है। ~~TSS वक्र~~ ~~ओर उठता~~ TSS वक्र कर की मात्रा के साथ कुल त्याग को बढ़ता हुआ बताता है तथा एक बिन्दु के बाद कुल त्याग तीव्र गति से बढ़ने लगता है।

उपरोक्त रेखचित्र में TSb तथा TSS वक्र का अन्तर सामाजिक लाभ को बताता है जहाँ MN पर अधिक सामाजिक लाभ प्राप्त होगा।

अधिकतम सामाजिक लाभ सिद्धांत की आलोचना—

* सामाजिक लाभ को मापना कठिन है,
* तुष्टिहीनता और तुष्टि के बीच असन्तुलन की सम्भावना प्रायः होता रहता है अतः व्यवहारिक जीवन में ऐसा बिन्दु पर पहुँचना कठिन है।
* कर-भार को मापना कठिन है।

निष्कर्ष → डॉल्टन ने स्वयं कहा है कि यह सिद्धांत सरल, स्पष्ट, दूरदर्शी है परन्तु इसका प्रयोग करना कठिन है। अतः यह आवश्यक है कि सरकार कि सरकारी प्रशासन की रचना प्रत्येक स्तर पर ऐसे योजना-निर्माताओं विशेषज्ञों तथा उच्च योग्यता वाले अधिकारियों को मिलाकर की जानी चाहिए जिससे एक निश्चित समय में खर्च किये गये सरकारी व्यय से अधिकतम लाभ प्राप्त करने में समर्थ हो।

Class by — Dr Manisha Kumari
P.G Dept. Economics
H.D. Jain College Ara